|  |
| --- |
| 11. Juli  |
| **Fest des hl. Benedikt** |
| Lesung: Spr 2,1-9; Evangelium: Mt 19,27-29 |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 435, 1+2 | Herr, ich bin dein Eigentum |
|  | GL 489, 1+2 | Lasst uns loben |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 163, 7 | Herr Jesus |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 167 | Dir Gott im Himmel |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Psalm 34, 2-4.6.9 u. 12.14-15 |
|  | Kehrvers:  |  |
|  | GL 212 | Kostet und seht |
|  | oder |  |
|  | GL 543, 1-3 | Wohl denen, die da wandeln |
|  | GL 433, 2 | Schweige und höre |
|  |  |
| Halleluja-Ruf: | GL 174, 5 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *Selig, die arm sind vor Gott;* |
|  | *denn ihnen gehört das Himmelreich.* |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 461, 1+2 | Mir nach |
|  | GL 457, 1-3 | Suchen und fragen |
|  | GL 456 | Herr, du bist mein Leben |
|  | GL 458 | Selig seid ihr |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 193 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 208 | Christe, du Lamm Gottes |
|  |  |  |
| Danksagung:  | GL 777, 1+4 | Kommt, lasst uns |
|  | GL 275, 1-3 | Selig, wem Christus |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 455, 1+2+4 | Alles meinem Gott zu Ehren |